ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(7): 325-330
www.allresearchjournal.com
Received: 20-04-2023
Accepted: 25-05-2023

संगम भारती
शोधार्थी, स्नातकोत्तर,
दर्शनशस्त्र विभाग,
टीएमबीयू, भागलपुर, बिहार
भारत

Corresponding Author:
संगम भारती
शोधार्थी, स्नातकोत्तर,
दर्शनशस्त्र विभाग,
टीएमबीयू, भागलपुर, बिहार,
भारत

भारत में शिक्षा के दर्शन पर एक अध्ययन: प्राचीन और आधुनिक परिप्रेक्ष्य

संगम भारती

सारांश
शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो चाहे स्कूल में चलती रहती है रखता है या नहीं. लोग स्कूल में प्रवेश करने से पहले कुछ भी सीखते हैं कक्षा के बाहर निरंतरता के बाद। वे सीखते रहते हैं यहाँ तक कि औपचारिक शिक्षा भी समाप्त हो जाती है। घंटों के दौरान भी औपचारिक स्कूली शिक्षा में छात्र बाहर बहुत कुछ सीखते हैं जो कि नहीं है नियोजित पाठ्यक्रम का एक भाग बनता है। छात्र एक सुरक्षित करता है चर्च से बड़ी मात्रा में शिक्षा, राजनीतिक चर्चा और भी पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन से जो हैं शिक्षा के साधन के रूप में प्रयुक्त और दर्शनशास्त्र का अध्ययन है जैसे मामलों से संबंधित सामान्य और बुनियादी समस्याएं अस्तित्व, ज्ञान, मूल्य और भाषा। दार्शनिक तरीके इसमें प्रश्न पूछना, आलोचनात्मक चर्चा, तर्कसंगत तर्क और शामिल हैं व्यवस्थित प्रस्तुति।

कुटशब्द: शिक्षा, स्कूल, भाषा, दर्शनशास्त्र, राजनीतिक चर्चा

प्रस्तावना
यह प्रकृति में व्यावहारिक है और दर्शन सिद्धांत है। दर्शन एक व्यापक अर्थ में जीवन जीने का एक तरीका है जीवन को प्रकृति और सत्य को देखते हुए। दूसरे मोड़ पर शिक्षा है दर्शन का गतिशील पक्ष. यह सक्रिय पहलू और व्यावहारिक पहलू है जैविक और जीवन के आदर्शों को साकार करने का साधन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण शिक्षा का दर्शन सामान्य दार्शनिक है शिक्षा के हर पहलू का अध्ययन और व्याख्या। मुहावरा शिक्षा का दर्शन न केवल दर्शन का एक भाग है, बल्कि यह भी है शिक्षा का हिस्सा. यह स्वयंसिद्ध विज्ञान की शाखा है जिसके बारे में यह अध्ययन करता है शैक्षिक मूल्य. शिक्षा दर्शन की समस्याएँ नहीं हैं सीमित। इसके बजाय यह शिक्षा का व्यावहारिक दृष्टिकोण नहीं अपनाता है; यह शैक्षिक प्रक्रिया के हर पहलू को समझता है। यह व्याख्या करता है विभिन्न क्षेत्र जैसे पाठ्यक्रम, संदर्भ, विधि, सीखना, शिक्षण, प्रेरणा और शिक्षा से जुड़े कई अन्य पहलू शिक्षा का दर्शन, दो शब्दों से बना है दर्शनशास्त्र और शिक्षा. फिलॉसफी शब्द दो ग्रीक शब्दों से बना है शब्द। पहला शब्द फिलो, का अर्थ है "प्रेम"। दूसरा, सोफिया का अर्थ है "बुद्धि"। वस्तुतः, दर्शन का अर्थ है "प्रेम"। बुद्धि।" प्रत्येक व्यक्ति का जीवन में सीखने और सीखने के प्रति एक दृष्टिकोण होता है पिछला व्यक्तिगत अनुभव जो उनके समूह को सूचित और आकार देता है विश्वास. हालाँकि किसी को इसकी जानकारी नहीं हो सकती. विश्वासों का यह समूह व्यक्तिगत दर्शन यह बताता है कि कोई कैसे रहता है,

कैसे काम करता है और कैसे बातचीत करता है आप दूसरों पर जो विश्वास करते हैं वह सीधे तौर पर आपकी शिक्षाओं में प्रतिबिंबित होता है और सीखने की प्रक्रिया. यह समझना जरूरी है कि दर्शन और शिक्षा कैसे होती है सबसे प्रभावी शिक्षण बनने के लिए आपस में जुड़े हुए हैं हो सकता है, आपको एक ही समय में अपनी मान्यताओं को समझना चाहिए दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना. इस अध्याय में हम इसके अध्ययन की जाँच करेंगे दर्शनशास्त्र, शिक्षा में विचार के प्रमुख दार्शनिक स्कूल।

शिक्षा के प्रमुख दर्शन क्या हैं?

शिक्षा के प्रमुख दर्शनों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है मुख्य प्रकार, शिक्षक केंद्रित दर्शन, छात्र केंद्रित दर्शन और समाज केन्द्रित दर्शन.

भारतीय शिक्षा दर्शन की पृष्ठभूमि

भारतीय जीवन दर्शन और विचार की मुख्य विशेषताएं आध्यात्मिक मूल्यों की खोज पर आधारित हैं जो अस्तित्व की एकता, मनुष्य की दिव्यता और पंथों और धर्मों के सामंजस्य पर जोर देती हैं। दूसरी ओर, शैक्षिक दर्शन की पश्चिमी परंपराएँ समाज में उसकी उपयोगिता के अनुसार मनुष्य के मूल्य को मापने के लिए जीवन के व्यावहारिक दृष्टिकोण पर जोर देती हैं (डुपुइस और गॉर्डन, 2010)। भारतीय शिक्षा दर्शन सार्वभौमिक मानवता और आध्यात्मिकता की भावना पैदा करने के सार को महत्व देता है। टैगोर अपने शिक्षा दर्शन में सार्वभौमिक मानवता की भावना की प्राप्ति से प्रेरित जीवन के पैटर्न को विकसित करने की आवश्यकता को दोहराते हैं।

शिक्षा दर्शन: भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारतीय परिप्रेक्ष्य: भारत में शैक्षिक आधार भी है तत्वमीमांसीय, ज्ञानमीमांसीय और स्वयंसिद्ध दृष्टिकोण में पाया जाता है दार्शनिकों का. भारतीय शिक्षा दर्शन विशिष्ट है
उद्देश्य, पाठ्यक्रम, कार्यप्रणाली और शिक्षा के अन्य पहलुओं के बारे में।

- **वैदिक काल:** शिक्षा का प्राचीन दर्शन है विशेषकर आध्यात्मिक या आदर्शवादी प्रकृति का। का मूल उद्देश्य वैदिक शिक्षा मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करने के लिए है। उद्देश्य वैदिक काल द्वारा सुझाए गए शिक्षा दर्शन हैं
- चरित्र निर्माण
- व्यक्तित्व का विकास
- सामाजिक भूमिकाओं और स्थिति का ज्ञान
- व्यावसायिक दक्षता

अतः शिक्षा दर्शन का उद्देश्य वैदिक कालीन नहीं है एक तरफा. इसमें व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया गया जीवन का अलग क्षेत्र.

भगवद-गीता में शिक्षा दर्शन: गीता वकालत करती है शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास। इसमें सदाचार पर बल दिया गया ज्ञान। सद्गुणी ज्ञान वह है जिससे हमें एकता का अनुभव होता है विविधता और प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का निवास देखना इस प्रकार अनुसार गीता की शिक्षा व्यक्ति को प्रत्येक जीवित प्राणी की आत्मा में ईश्वर के अस्तित्व को देखने में सक्षम बनाती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गीता सुझाव देती है व्यक्ति का व्यक्तिगत एवं बौद्धिक विकास। फिर गीता दो उद्देश्यों के लिए व्यक्ति के कर्तव्य पर जोर दिया जाता है, पहला व्यक्ति के लिए महत्व और दूसरा सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए। लेकिन भीतर के बिना चेतना और ज्ञान वह दो प्रयोजनों के लिए कर्तव्य नहीं कर सकता, पहला है व्यक्तिगत महत्व के लिए और दूसरा सामाजिक जिम्मेदारी के लिए। लेकिन आंतरिक चेतना और ज्ञान के बिना वह अपना कार्य नहीं कर सकता अपना कर्तव्य. अतः गीता की शिक्षा का उद्देश्य समग्र है व्यक्ति का विकास

आयुर्वेद में शिक्षा की अवधारणा: आयुर्वेद में तीन मानदंड या ज्ञान प्राप्त करना यानी अध्ययन, शिक्षण और चर्चा या वाद-विवाद में भागीदारी।

- **अध्ययन की प्रक्रिया :** विषय का अध्ययन करने के लिए कुछ अनुशासन होते हैं। शिष्य को स्वस्थ और अध्ययन के प्रति समर्पित होना चाहिए। उसे सुबह जल्दी या रात के आखिरी पहर में उठना चाहिए। फिर उसे स्नान करना चाहिए और देवताओं, ऋषियों, ब्राह्मणों, शिक्षकों, बुजुर्गों और प्रबुद्ध व्यक्तियों और गुरुओं की पूजा करनी चाहिए और फिर एक समतल और स्वच्छ स्थान पर आराम से बैठना चाहिए। इसके बाद उसे ध्यान लगाकर मौखिक रूप से सूत्रों का पाठ करना चाहिए। ठीक से समझ लेने के बाद उसे अपनी कमियों को दूर करने और दूसरों की कमियों की गवाही देने के उद्देश्य से अपना पाठ दोहराना चाहिए। उसे दोपहर और रात में बिना किसी रुकावट के अपना अभ्यास जारी रखना चाहिए। यह अध्ययन की प्रक्रिया है.
- **पढ़ाने की प्रक्रिया:** पढ़ाने के भी कुछ नियम और कानून हैं। शिक्षण कार्य करने की योजना बना रहे

गुरु को सबसे पहले स्वयं अनुशासन की जांच करनी चाहिए।

विद्यार्थी के सामान्य व्यवहार के बारे में निर्देश

- आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए, दाढ़ी रखनी चाहिए, सत्य बोलना चाहिए, शाकाहारी भोजन करना चाहिए।
- तुम्हें हमेशा मेरे निर्देशों का पालन करना चाहिए सिवाय इसके कि जब वे देश के शासक के खिलाफ जाएं।

चर्चा या वाद-विवाद में भागीदारी

वाद-विवाद की प्रक्रिया को समझाने के बाद सुनें। एक शिक्षक/चिकित्सक को दूसरे चिकित्सक के साथ चर्चा में भाग लेना चाहिए। व्यावसायिक चर्चा वास्तव में ज्ञान के अनुप्रयोग और प्रतिस्पर्धा की शक्ति को बढ़ावा देती है जिससे ज्ञानोदय होता है।

अध्ययन के लिए चुने जाने वाले शिष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ सामान्य स्थिति में होनी चाहिए। ज्ञानेन्द्रियों की असामान्य स्थिति वाले व्यक्ति को अध्ययन के लिए अनुपयुक्त माना जाता है।

यह ज्ञान की स्पष्टता को प्रकट करता है, वाणी की शक्ति को बढ़ावा देता है, प्रसिद्धि फैलाता है, बार-बार सुनने से पिछले अध्ययन की याद दिलाने वाली शंकाओं को दूर करता है और जो निस्संदेह पहले समझा गया है उसकी पुष्टि करता है। चर्चा के दौरान कई नई बातें पता चलती हैं जो पहले नहीं सुनी थीं। समर्पित अनुशासन से प्रसन्न होकर, पाठ्यक्रम के दौरान पारस्परिक चर्चा के दौरान उपदेशक प्रतिस्पर्धी पर विजय प्राप्त करने की दृष्टि से उत्साहपूर्वक इन गुप्त अर्थों को संक्षेप में प्रकट करते हैं। इसलिए पेशेवर बहस में भाग लेने की बुद्धिमानों द्वारा हमेशा सराहना की जाती है। इसलिए आयुर्वेद जैसे स्वास्थ्य विज्ञान में एक चिकित्सक को अपने शिष्य को भविष्य में एक सक्षम और सफल चिकित्सक बनाने के लिए चर्चा के साथ-साथ पढ़ाना और प्रशिक्षित करना होता है।

शिक्षा की अवधारणा बौद्ध और जैन धर्म: जैन और बौद्ध धर्म ने शिक्षा के उद्देश्य के रूप में अहिंसा को स्वीकार किया। आम आदमी की धार्मिक आकांक्षाओं और प्रतिक्रियाओं ने बौद्ध धर्म और जैन धर्म को जन्म दिया, जिनके संस्थापकों ने धर्म को आम आदमी तक पहुंचाने, नैतिकता, आत्म-नियंत्रण और अच्छे काम पर अधिक जोर देने, मानव जीवन को अधिक तर्कसंगत व्याख्या देने और आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास किया। सभी आम आदमी को व्यक्तिगत ईश्वर में विश्वास करना चाहिए। भारतीय इतिहास में मुस्लिम शासन काल के दौरान यह वैदिक और इस्लामी शिक्षा की मिश्रित शिक्षा प्रणाली थी। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य दर्शन धर्म के उद्देश्य से प्राप्त हुआ। कुरान की शिक्षा को ध्यान में लाया गया। पुनः लक्ष्य सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास हेतु व्यावहारिक कौशल पर आधारित है। वैदिक और इस्लामी दोनों ही शिक्षा उनके सम्मान से प्रभावित थीं।

मध्यकालीन काल: मध्यकालीन भारत का काल लगभग 10वीं शताब्दी ई. से लेकर 18वीं शताब्दी के मध्य तक है। ब्रिटिश शासन से पहले। मध्यकालीन भारत में शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र था जो काफी हद तक सीमित था, जो ट्रांसमिशन के प्रबंधन में शामिल थे, तकनीकी रूप से यह कुछ ऐसा था जो हर किसी की पहुंच में था।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य

मध्यकालीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार बताये गये हैं:

- मुस्लिम काल के दौरान शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान का विस्तार करना और इस्लाम का प्रचार करना था।
- शिक्षा धर्म पर आधारित थी और इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को धार्मिक विचारधारा वाला बनाना था। मुस्लिम शिक्षा का लक्ष्य भौतिक संपदा और समृद्धि प्राप्त करना था।

आधुनिक काल: भारत में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश शासन के तहत हुई। 8 फरवरी, 1935 को मैकाले अध्यक्ष ने अपने ऐतिहासिक 'टकसालों' से भारतीय साहित्य और संस्कृति पर कटु प्रहार किया। इसलिए भारत को आजादी मिलने से पहले ही वहां के प्रसिद्ध विचारक स्वामी विवेकानन्द, श्री अरबिंदो और आर.एन. टैगोर ने शिक्षा के प्रचलित दर्शन की आलोचना की और वैकल्पिक दर्शन प्रस्तुत किया। उन्होंने पुराने ज्ञान और सिद्धांतों की व्याख्या नए ज्ञान के आलोक में और समसामयिक परिस्थितियों के संदर्भ में की है।6 भारतीय शिक्षा दार्शनिकों ने शिक्षा के लगभग हर क्षेत्र में उद्देश्य, साधन, पाठ्यक्रम, शिक्षक, में एक अभिन्न अनुमोदक का समर्थन किया। छात्र संबंध, शिक्षण विधियां और स्कूल प्रशासन आदि। यह सभी प्रकार की शिक्षा को समान मूल्य देता है। आधुनिक शिक्षा विभिन्न प्रकार की प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, इंटरनेट और बहुत कुछ से सहायता प्राप्त है। लोगों के बीच विविध ज्ञान का प्रसार किया जा रहा है। जो कुछ भी सरल किया जा सकता था उसे सरल

बनाया गया है। विज्ञान ने जीवन के हर पहलू की खोज की है। सीखने के लिए बहुत कुछ है और आत्मसात करने के लिए और भी बहुत कुछ है। इंटरनेट अत्यंत अथाह ज्ञान प्रदान करता है। इसका कोई अंत नहीं है। कोई भी व्यक्ति वह सब कुछ सीख सकता है जो वह चाहता है, प्रत्येक विषय एक विषय के रूप में विकसित हो चुका है।

नए-नए आविष्कार और खोजें सामने आई हैं। अज्ञात दुनिया हमारे लिए अधिक विविधतापूर्ण है। एक बार जब कोई नया पहलू खोजा जाता है, तो न केवल हमारा पौधा, बल्कि पूरा ब्रह्मांड सुलभ हो जाता है, सैकड़ों सिर बड़बड़ाने लगते हैं। अब हमारे पास अच्छे और विद्वान शिक्षक हैं जो हमें वह ज्ञान प्रदान करते हैं जो वे जानते हैं। हर कोई अपने क्षेत्र में माहिर है।

हमें और हमारे बच्चों को उनके क्षेत्र के पेशेवर पढ़ा रहे हैं। वर्तमान में हमारी शिक्षा हमें हमारी रुचि के अनुसार सर्वश्रेष्ठ बनाने, हमारे लक्ष्यों तक अधिक आसानी से पहुंचने में मदद करने पर आधारित है। अधिक तथ्य आधारित ज्ञान हमारे द्वारा ग्रहण किया जा रहा है, जो हम सीखते हैं वह हमें अपने पेशे में अपने करियर में मदद करता है, व्यावसायिकता अब हमारे समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी है और यही शिक्षा हमें बनाती है। कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक नया पंख जोड़ा है।

हर किसी के लिए सीखने के लिए कुछ न कुछ है। यहां तक कि वहां एक शिशु भी किंडरगार्टन जाता है और थोड़ा बड़ा हो जाने पर उसे मानसिक और शारीरिक रूप से मोंटेसरी में पदोन्नत किया जाता है। हर चीज़ को वर्गीकृत किया जा रहा है चाहे वह प्राथमिक, मध्य, उच्चतर माध्यमिक या स्नातक विद्यालय हो। हमारे पास शिक्षा के मंदिर हैं जिन्हें एक परिचित शब्द "विश्वविद्यालय" से जाना जाता है।

शैक्षिक दर्शन की प्रमुख चुनौतियाँ

अब तक खोजा गया शैक्षिक दर्शन बौद्धिक बहस और संवाद के लिए एक आधार प्रदान करता है जो भारत के वर्तमान संदर्भ में शैक्षिक दर्शन और अभ्यास की समझ को गहरा कर सकता है। भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षार्थी के हित को संबोधित करने और शिक्षार्थी के लिए प्रासंगिक होने और तेजी से बदलती दुनिया में उसे विकसित करने के लिए आवश्यक शैक्षिक मूल्यों में असमर्थ है (ग्रिफिथ्स, 2014; हेडन, 2012)। यह केवल रोजगार पर ध्यान केंद्रित करता है और परीक्षाओं को याद करने, रटने और पास करने का जुनून पैदा करता है। यह महान भारतीय दार्शनिकों के शैक्षिक दर्शन को देखने और आज उनकी प्रासंगिकता के लिए उनके शैक्षिक विचारों और विचारों की फिर से जांच करने का एक महत्वपूर्ण समय है। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो न केवल शिक्षार्थी की आत्मा को ज्ञान से पोषित करे बल्कि दूसरों के प्रति सहानुभूति की भावना पैदा करने को भी महत्व दे। इसके अतिरिक्त, इसे छात्रों को आत्म-सुधार और व्यक्तिगत संतुष्टि की ओर बढ़ने में मदद करने की आवश्यकता है

इस संदर्भ में, मेरा तर्क है कि विश्वविद्यालयों को बौद्धिक संवाद के लिए आवश्यक परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए भारतीय शैक्षिक दार्शनिकों के शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार की गहरी समझ रखने की आवश्यकता है। हमारे शैक्षिक दर्शन की निरंतरता और अर्थपूर्ण सार्थकता को बढ़ावा देने के लिए गुणवत्ता, स्पष्टता और कठोरता की भी कमी है। शैक्षिक दर्शन के क्षेत्र में विद्वतापूर्ण अनुसंधान के साथ-साथ एक सूचित बहस के परिप्रेक्ष्य की कमी के साथ, 'शुद्ध' दार्शनिकों और शिक्षा के दार्शनिकों के बीच संचार की स्पष्ट अनुपस्थिति है, जो इसके विकास के लिए हानिकारक साबित हुई है। विशेष रूप से, इस अंतर के कारण आज की शिक्षा को प्रासंगिक, समसामयिक और फिर भी हमारे स्थानीय संदर्भों में निहित बनाने में विफलता हुई है।

यह समझा जा सकता है कि मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली में कई परिवर्तन और बदलाव हुए। शिक्षा प्रणाली सभी प्रतिबंधों से मुक्त थी।

महिलाओं और लड़कियों के लिए बहुत सम्मान था, लेकिन समुदाय की लड़कियों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कोई संतोषजनक प्रावधान नहीं किए गए थे। शिक्षा केवल उच्च और धनी परिवारों की महिलाओं तक ही सीमित थी। इन परिवर्तनों और परिवर्तनों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में व्यक्ति के बीच जागरूकता पैदा करना था। न केवल धनी समुदायों से संबंधित व्यक्तियों को, बल्कि विभिन्न श्रेणियों और पृष्ठभूमियों से संबंधित सभी व्यक्तियों को शिक्षा तक पहुंच प्राप्त करनी चाहिए। धीरे-धीरे, नीतियों और रणनीतियों की शुरूआत के कारण शिक्षा प्रणाली अधिक व्यवस्थित और व्यवस्थित हो गई।

चर्चा

प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा दर्शन के संबंध में लोगों की राय में मतभेद है।

कक्षा: पारंपरिक कक्षा में शिक्षक अवधारणा को मौखिक रूप से समझाने का प्रयास करेंगे। न तकनीक थी, न मल्टीमीडिया, न बोलने की आजादी थी। एक आधुनिक कक्षा में शिक्षक वाष्पीकरण के वास्तविक

जीवन के विभिन्न उदाहरणों में से चुन सकते हैं जैसे चाय के लिए उबलता पानी या धूप में सूखते कपड़े और छात्रों को वाष्पीकरण के अनुभव से परिचित कराने के लिए एक छोटा वीडियो। संज्ञानात्मक विकास: प्राचीन शिक्षण पद्धति में, शिक्षक छात्रों को ज्ञान का संचार करता है और उम्मीद करता है कि इसे छात्रों द्वारा अवशोषित और आत्मसात किया जाएगा। यह आमतौर पर विषयों की वास्तविक समझ के बिना रटने की ओर ले जाता है। आधुनिक शिक्षण विधियों का उपयोग करके। छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में गहराई से शामिल किया जा सकता है और शोध करने और अपने स्वयं के विश्लेषण के साथ आने के लिए कहा जा सकता है, जिससे दो-तरफा शिक्षा मिलती है जो उनकी संज्ञानात्मक, तर्क और कल्पनाशील क्षमताओं को तेज करने में मदद करती है।

सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास: चूंकि पारंपरिक शिक्षण विधियां आमतौर पर एक संरचित यूनिडायरेक्शनल दृष्टिकोण का पालन करती हैं। छात्रों को उनके सामने जो प्रस्तुत किया गया है उससे आगे जाने का अवसर नहीं मिलता है। ऐसे मामले में जहां अधिक आधुनिक तकनीकों को लागू किया जाता है। छात्रों को पाठ्य पुस्तक से परे ज्ञान से अवगत कराया जाता है जो आत्मविश्वास बढ़ाने, सशक्तीकरण की भावनाओं को बढ़ाने में योगदान देता है जिससे व्यक्तित्व अधिक गोल होता है।

अनुभवात्मक शिक्षा: ऊपर उल्लिखित वाष्पीकरण उदाहरण में, हमने देखा कि पारंपरिक शिक्षण मुख्य रूप से मौखिक संचार का उपयोग करता है जबकि आधुनिक पद्धति विभिन्न तरीकों का उपयोग करती है। आधुनिक शिक्षण में अधिक समग्र अनुभवात्मक शिक्षा शामिल है जहां छात्र विभिन्न इंद्रियों और भावनाओं या धारणाओं को शामिल करके सीखते हैं। ज्ञान का निर्माण खेल के प्रत्यक्ष अनुभव और सामाजिक संपर्क के माध्यम से किया जाता है।

अध्ययन का निहितार्थ

पेपर का लक्ष्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली है जो न केवल आध्यात्मिक मूल्यों की उपेक्षा करती है बल्कि मस्तिष्क के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करने में भी विफल रहती है। छात्रों पर ढेर सारी अंधाधुंध जानकारी थोपी जाती है, जो सोचने की प्रक्रिया को उत्तेजित करने में विफल रहती है। भारतीय शैक्षिक दार्शनिकों, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द और श्री अरबिंदो के शैक्षिक दर्शन केवल कक्षाओं में पढ़ाए जाते हैं, लेकिन उन्हें छात्रों तक स्थानांतरित नहीं किया जाता है; इसलिए, मानवता की रक्षा, नैतिकता और सहिष्णुता जैसे मूल्य, आशाजनक दार्शनिक सिद्धांतों के रूप में धर्मग्रंथों के भीतर अधूरे वादों के रूप में बंद हैं। इस समय, इन उपर्युक्त शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत शैक्षिक दार्शनिक ढांचे के बुनियादी सिद्धांतों को बुनना महत्वपूर्ण है। इन दार्शनिकों में समानताओं को ध्यान में रखते हुए, हम देखेंगे कि उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के लिए तर्क दिया जो समानता, धर्मनिरपेक्षता और ज्ञान की प्रधानता स्थापित करने में प्रभावी हो। उन्होंने यह भी कहा था कि राज्य के नागरिकों के बीच अंतर को पाटने के लिए ग्रामीण समाज के साथ जुड़ने की जरूरत है। उन्होंने कल्पना की कि शिक्षा की भूमिका रचनात्मकता, कौशल विकसित करना और छात्रों को आत्मनिर्भर, जागरूक और स्थानीय संदर्भ में स्थापित करना है। उनका मानना था कि इससे देश में लोकतांत्रिक उत्साह का निर्माण होगा और इसका धर्मनिरपेक्ष ताना-बाना मजबूत होगा, जिसे हासिल करने का वादा हमने संविधान में किया था।

निष्कर्ष

हम आधुनिक युग में जी रहे हैं, लेकिन हमें अपने पूर्वजों की विरासत की सभ्यता और संस्कृति पर गर्व है। हम धन, शक्ति, हिंसा और कूटनीति की अपेक्षा चारित्रिक अध्यात्मवाद दर्शन को अधिक प्राथमिकता देते हैं। हम आदर्श जीवन जीना चाहते हैं। वैदिक युग के शैक्षिक उद्देश्य को सैद्धांतिक रूप से आधुनिक शिक्षा के उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया जाता है ताकि हमारे युवाओं के लिए चरित्र निर्माण और जीवन को जीने लायक बनाया जा सके। इस समय शिक्षा समूह में संयुक्त होने के बजाय अधिक व्यक्तिवादी थी, बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। मॉर्डन शिक्षा में भी इसी समय का ध्यान रखा जाता है। जाति, धर्म, रंग आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। मॉर्डन में संविधान ने शिक्षा के क्षेत्र में समानता के सिद्धांत को अपनाया है।

आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा: शिक्षा के बौद्धिक पहलू से हटकर व्यावहारिक पक्ष को नज़रअंदाज नहीं किया गया और छात्रों को कला, साहित्य और दर्शन के साथ-साथ कृषि और जीवन के अन्य व्यवसायों का व्यावहारिक ज्ञान भी मिला। मॉर्डन शिक्षा छात्रों को अपने भावी जीवन के लिए खुद को तैयार करने पर भी जोर देती है। व्यावसायिक विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। व्यावसायिक शिक्षा एवं वैदिक गणित : व्यावसायिक शिक्षा एवं गणित शिक्षा वैदिक काल की प्रमुख विशेषताएँ हैं। व्यापारिक भूगोल के

दायरे और प्रकृति, विभिन्न इलाकों के लोगों की जरूरतों, विनिमय मूल्य और लेखों की गुणवत्ता और बोली जाने वाली भाषा और विभिन्न प्रवृत्ति केंद्रों के विचारों को आवश्यक माना गया।

वैदिक गणित अब अधिक लोकप्रिय हो गया है। अधिक से अधिक माता-पिता वैदिक गणित के महत्व के बारे में जानते हैं और अपने बच्चों को वैदिक गणित सीखने के अवसर प्रदान करने में रुचि ले रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि शिक्षा जीवन की नींव है। शिक्षक अन्य सभी व्यवसायों का निर्माण करते हैं शिक्षक के बिना हमारे पास डॉक्टर, पुलिस, अधिकारी, वकील और अन्य पेशे नहीं होते। शिक्षा न केवल छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि यह बच्चों को विभिन्न जीवन कौशल, आत्म-अनुशासन, आत्म-सम्मान, समस्या सुलझाने के कौशल और जिम्मेदारी सिखाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. क्लार्क, जॉन (2016)''आज के शब्द और कल के'' में शिक्षा का दर्शन: ''डाउन अंडर'' से एक दृश्य। कैनेडियन फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन सोसायटी का जर्नल। खंड 15, संख्या 1, पृ.21-30
2. डेवेल, जे. (2001) लोकतंत्र और शिक्षा: शिक्षा के दर्शन का एक परिचय।
3. शर्मा, आर.के. एवं डैश, वी.बी.(2017) कारक संहिता। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत श्रृंखला कार्यालय।
4. पांडे आर.एस. (2000) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन। अग्रवाल प्रकाशन. पी। 19-29
5. ओध के.एल. (2014) शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य. राजस्थान: हिंदी ग्रंथ अकादमी
6. बनर्जी, ए.के. (2015) स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट,4(3), 030-035।
7. भाटिया, के. (1992) शिक्षा की दार्शनिक और समाजशास्त्रीय नींव।
8. भट्टाचार्जी, एस. (2014) उत्तर आधुनिक युग में टैगोर के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता-एक वैचारिक विश्लेषण। ओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर-जेएचएसएस) खंड, 19, 34-40।
9. चक्रवर्ती, एम. (1995) शिक्षा दर्शन में अग्रणी. संकल्पना प्रकाशन कंपनी।